

विचार बिन्दु

आतंक का जन्म असंतोष से होता है असमानता से इसे हवा मिलती है और यह अपनी आग में हज़ारों को लेकर जल भरता है। -मुक्ता

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे!

समाचारों की भी अपनी एक संवेदना होती है। वे केवल सूचनाएँ नहीं लाते, समय का त्रास और ताप भी साथ लाते हैं। रिपोर्टें विदाउट बाईसेस द्वारा तैयार की गई विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूची 2026 को पढ़ते हुए ऐसा लगता है, जैसे किसी ने हमारे समय की नब्ब पर डंगली रख दी हो, और पाया हो कि वह ठीक नहीं चल रही है। इस रिपोर्ट में दर्ज यह तथ्य कि प्रेस की स्वतंत्रता पिछले पच्चीस वर्षों के सबसे निम्न स्तर पर है, केवल एक आँकड़ा नहीं है। यह हमारे समय के ललाट पर उभरती वह महीन रेखा है, जो भीतर चल रही थकान और तनाव का संकेत देती है। लोकतंत्र को यदि एक जीवित देह मानें, तो प्रेस उसकी श्वास है। श्वास का काम दिखना नहीं होता, चलते रहना होता है। लेकिन जब श्वास ही सिकुड़ने और अनियमित होने लगे, तो देह की सारी सक्रियता एक अनकहे भय से भर जाती है।

दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि यह स्थिति किसी एक देश की नहीं है। दुनिया के अनेक हिस्सों में पत्रकारिता अब ऐसे चौराहों पर खड़ी है, जहाँ सत्ता, बाजार और भीड़-इन तीन दिशाओं से दबाव आता है। सत्ता चाहती है कि कलम नियंत्रित रहे, बाजार चाहता है कि वह बिकने को तैयार हो, और भीड़ चाहती है कि कलम वही लिखे जो वह पढ़ना चाहती है। और इन तीनों के बीच 'सत्य' कहीं किसी अंधेरे कोने में गर्दन झुकाए खड़ा रह जाता है। अकेला, थोड़ा असहज, और भय: अव्यक्त।

हम ऐसे विचित्र समय में जी रहे हैं जहाँ स्वतंत्रता का उच्चारण तो बार-बार होता है, पर उसका प्रयोग और अनुभव धीरे-धीरे सीमित होता जा रहा है। अब कोई यह भी नहीं कहता कि सच मत बोलो। आप खुद ही समझ जाते हैं कि सच बोलना कितना हानिप्रदाय वा घातक हो सकता है। भय अब अमूर्त है और पूरे वातावरण में घुला-मिला है। असल में यह ऐसा समय है जब पत्रकार और लेखक अपने भावों को कागज़ पर उतारने से पहले कई-कई बार पढ़ते और सोचते हैं कि कहीं उनकी कोई बात किसी को आहत तो नहीं कर देगी? कहीं कोई बुरा तो नहीं मान जाएगा? कहीं वे ज़्यादा ही मुख़र तो नहीं हो गए हैं? कहीं उन्होंने ऐसी कोई बात तो नहीं लिख दी है जिससे कोई प्रभावशाली या वर्चस्वशाली उनके खिलाफ़ सक्रिय हो उठेगा? और यह सोच उनकी कलम की रवानी को थाम लेता है, शब्दों की धार भँथरी हो जाती है, जिस बात को अधिधा में कहा जाना चाहिए था वह लक्षणा या व्यंग्य का तिरफ़ आशा भरी नज़रों से देखती है! और इस पूरी प्रक्रिया में बहुत बार कहने योग्य बात बिना बार आए ही दम तोड़ देती है।

इस रिपोर्ट में हमने देखा है कि हमारा अपना भारत भी 180 देशों की सूची में 151वें स्थान से फिसल कर 157वें स्थान पर आ गया है। भले ही आधिकारिक वक्तव्य इस रिपोर्ट को नकारें, और ऐसा करना उम्मेद दायित्व का अभिन्न अंग है, जो लोग नियमित रूप से अखबार पढ़ते हैं, मीडिया के उपभोक्ता हैं और जिनकी आंखें, कान और दिमाग़ खुले हैं वे इस बात की पुष्टि करेंगे कि रिपोर्ट ग़लत नहीं है। कुछेक अपवादों को छोड़ दें तो हम पाते हैं कि हमारे सारे के सारे अखबार एक ही पंख से चीज़ों को देखने और दिखाने लगे हैं। कहना अनावश्यक है कि वह पंख कौन-सा है। वे ऐसी कोई बात अपने पंखों पर नुमायाँ होने ही नहीं देते हैं जिससे प्रतिष्ठान को तनिक भी असुविधा हो। और यही हाल टीवी चैनलों का भी है। असल में चाहे अखबार हों या निजी टीवी चैनल, उनमें भारी निवेश होता है और जो निवेश करते हैं उनके अपने व्यावसायिक हित होते हैं। सरकारी प्रकाशनों और चैनलों की तो बात ही छोड़ दें। उनका तो धर्म ही अपने नज़रिए का प्रचार-प्रसार करना है। उनसे कोई शिकायत भी नहीं है। वैसे शिकायत तो इनसे भी नहीं है। जिस अखबार की एक प्रति के उत्पादन में

बोस रुपये की लागत आती हो उसे मात्र पांच रुपये में खरीदने वाला भ्रमा किम मुंह से शिकायत करे? सरकारी और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के पास उन्हें पालतू बनाकर रखने के लिए विज्ञापन की बहुत बड़ी ताकत है। अब तो इस बात को खुले आम कहा जाता है कि हम आपको विज्ञापन दे रहे हैं तो आप भी हमारे प्रति अपना फर्ज निभाएँ। और वे निभाएँ हैं। जो फर्ज नहीं निभाएँ हैं उनके विज्ञापन बंद कर दिए जाते हैं। आपको भी ऐसे बहुत सारे उदाहरण याद होंगे। जिनके विज्ञापन एक बार बंद हो जाते हैं वे इससे सबक लेते हैं और फिर औरों से भी ज़्यादा वफ़ादार नज़र आने के प्रयासों में जुट जाते हैं। दुर्धत कुमार को याद कर लीजिए: मौलवी से डाँट खा कर अहल-ए-मकतब/फिर उसी आयात को दोहराने लगे हैं।

इस स्थिति को हम पाठकों ने भी जैसे स्वीकार कर लिया है। वैसे, हमारे पास विकल्प भी क्या है? हमने मान लिया है कि कुछ प्रगट आने जा सकते हैं, कुछ तथ्यों को प्रतीक्षा में रखा जा सकता है, और कुछ आवानुओं को अनुसूना किया जा सकता है। हमने यह स्वीकार मान्यता प्रदान की है, आहिस्ता-आहिस्ता अपनाया है। लेकिन अब यह हमारी आदत में शुमार हो गया है। उन्ही दुर्धत कुमार ने लिखा तो था: इस शहर में वो कोई बारात हो या वारादत/अब किसी भी बात पर खुलती ही नहीं है खिड़कियाँ।

क्या मुझे यहाँ राजस्थान की भी बात करनी चाहिए? एक शांत प्रदेश। कोई ख़ास उथल-पुथल, कोई बड़ा शोर-शराबा नहीं। उस फ़िल्मीडायलॉग की मानिंद सब ठीक चल रहा है। ऑल इज़वेल! रोज सुबह वेण्डर अखबार डाल जाता है। अखबार उतरे ही पंखों का होता है जितने पंखों का पहले हुआ करता था। बल्कि कभी-कभी तो उसमें ज़्यादा पंख भी आने लगे हैं। हर पन्ना बुरा हुआ होता है। कभी विज्ञापन से तो कभी ख़बरों से। तो मान लें कि सब ठीक है। लेकिन उन ख़बरों का क्या जो छपती ही नहीं हैं? उन सवालियों का क्या जो कभी पूछे ही नहीं जाते हैं? उन वाक्यों का क्या जिन्हें पाठक की आंखों के सामने पहुँचने से पहले ही डिलीट कर दिया जाता है? क्या एक पाठक के रूप में आपको भी ऐसा लगता है कि बहुत कुछ है जो आपके सामने नहीं आ रहा है? अगर लगता है तो ठीक है, और नहीं लगता है तो यह चिंता की बात है। जिसे कहते हैं दृष्टि दोष, यह वैसा कुछ है। आपके सामने बहुत कुछ है और आपको दिखाई ही नहीं दे रहा है, यह तो बड़ी गंभीर बात है! नहीं है?

मैं मानता हूँ कि पत्रकारिता में संयम आवश्यक है। बात को शालीनता से और सलीके से कहा जाना चाहिए। लिखना बहुत जिम्मेदारी का काम है। तथ्यों की पूरी पडताल के बाद लिखा जाना चाहिए। लेकिन यह भी हम देख रहे हैं कि वर्चस्वशाली सत्ता सूचना के सारे स्रोतों को एक-एक करके सुखा रही है। सूचना के अधिकार को एकदम लुप्त पंज कर दिया गया है। हर सूचना गोपीनीयता के आवरण में लपेट कर टोंड पर रख दी गई है जहाँ आपको पहुँच नहीं है। पत्रकारों कलमकारों से शालीन बने रहने की अपेक्षा पहले से कई गुना ज़्यादा हो गई है। लेकिन शालीनता जब मौन का पर्याय बन जाए तो चिंता होना स्वाभाविक है। जब भाषा की धार भँथरी हो जाती है तो वह सत्य नहीं बखानती, केवल सूचना देती है। बहुत बार अनावश्यक सूचना। और यही वह समय होता है जब हम पाते हैं कि हम एक दौरा पर खड़े हैं। यही वह क्षण होता है जब वर्तमान अपने ही दायित्व से पीछे हटता हुआ नज़र आता है। हम उसी क्षण में जी रहे हैं। हमारे समय की विडंबना शायद यही है कि अब हम स्वतंत्रता दी नहीं जाती, हमें उसकी सीमा समझाई जाती है। यह कुछ ऐसा ही है जैसे कोई हमसे कहे कि आप खुलकर बोलिए, और फिर धीरे से यह और कह दे कि बस, इतना ध्यान रखिए कि आवाज़ बाहर न जाए!

यह वह समय है जब इस बात को याद किया जाना जरूरी हो गया है कि प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है और इसे न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के बराबर महत्व दिया गया है। यह सही भी है। लोकतंत्र अंततः शब्दों पर ही टिका होता है। उन शब्दों पर, जो प्रश्न करते हैं, जो असहमति को स्थान देते हैं, जो असुविधा को स्वीकार करते हैं। अगर शब्द ही संकोच करने लगें, उन पर पहरे लग जायें तो वाक्य अधूरे रह जाते हैं। और अधूरे वाक्यों से कोई भी समाज अपनी पूरी कहानी नहीं लिख सकता। इसलिए सवाल केवल प्रेस की स्वतंत्रता का नहीं है। सवाल हमारी अस्मिता और हमारे अद्वैतत्व का है। किसी ने इस समय पर बहुत मानीखेज बात कह दी है: हमारे समय की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद यही है कि हम चुप रहते हुए भी खुद को अभिव्यक्त मान लेते हैं। और अंत में, यह भी स्मरण कर लिया जाना चाहिए कि हमारे समय के बहुत बड़े शायर ने कहा था, बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे! बोल ज़बाँ अब तक तेरी है!

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

महाराणा प्रताप-स्वधर्म और स्वराज के प्रतीक



सूर्यप्रतापसिंह

हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच युद्ध के निर्णय को लेकर आज तक चर्चा हो रही है। युद्ध में किसकी हार हुई? किसकी जीत इस पर विद्वान इतिहासकारों का एक मत क्यों नहीं बन पा रहा? यह समझ से परे है जबकि युद्ध की घटना युद्ध में पहले आक्रमण किसने किया? युद्ध में सेना की क्षमता किसकी ज्यादा थी? युद्ध में पीछे कौन हटा? पीछे हटना क्या युद्ध में रणनीति का भाग नहीं होता? युद्ध की नैतिकता सामान्य परिस्थितियों की नैतिकता में भिन्नता होती है। इस पर कोई दो राय नहीं है।

युद्ध में कौन जीता और कौन हारा इसका आंकलन इस बात से लगाया जा सकता है कि किस प्रकार उस युद्ध ने भविष्य को नई दिशा दी। भारत के

इतिहास में महाराणा प्रताप को स्वधर्म और स्वराज के लिए जीवन त्यागने वाले योद्धा के रूप में उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। युद्ध के समय में वीर सावरकर लिखते हैं कि जो सीता अपहरण को राम रावण युद्ध का कारण और कारत्स में गेंगे मौसं और सूरज के मौसं को 1857 के विद्रोह का कारण बताते हैं वह विमर्श और इतिहास लेखन में अंतर नहीं जानते हैं।

वीर सावरकर लिखते हैं कि स्वधर्म और स्वराज के सिद्धांत राम रावण युद्ध और 1857 के विद्रोह के कारण बने थे इसी प्रकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के पुत्र राजीव नैन प्रसाद की पुस्तक 'राजा मानसिंह ऑफ़ आमेर' मध्यकालीन भारत में राजा मान सिंह की भूमिका पर गहन शोध है कि किस प्रकार राजनैतिक संघि कर भारत को धर्मांतरण की आंधी से बचाया। नरम दल हो या गरम दल भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वधर्म और स्वराज के लिए ही विदेशी हुकुमत के विरुद्ध आंदोलन हुआ था। अंतिम उद्देश्य सभी का भारत की स्वतंत्रता थी। किसी को विलम्ब से तो किसी को अविलम्ब स्वतंत्रता चाहिए थी।

स्वधर्म और स्वराज के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने सहर्ष फांसी की सजा स्वीकार की। महात्मा गांधी ने इस विषय पर हिन्द स्वराज नाम

विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध कहना तथ्यपरक और सिद्धान्तिक रूप से युद्ध था। इसके समर्थन में वीर सावरकर लिखते हैं कि जो सीता अपहरण को राम रावण युद्ध का कारण और कारत्स में गेंगे मौसं और सूरज के मौसं को 1857 के विद्रोह का कारण बताते हैं वह विमर्श और इतिहास लेखन में अंतर नहीं जानते हैं।

स्वधर्म और स्वराज के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने सहर्ष फांसी की सजा स्वीकार की। महात्मा गांधी ने इस विषय पर हिन्द स्वराज नाम

विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध कहना तथ्यपरक और सिद्धान्तिक रूप से युद्ध था। इसके समर्थन में वीर सावरकर लिखते हैं कि जो सीता अपहरण को राम रावण युद्ध का कारण और कारत्स में गेंगे मौसं और सूरज के मौसं को 1857 के विद्रोह का कारण बताते हैं वह विमर्श और इतिहास लेखन में अंतर नहीं जानते हैं।

स्वधर्म और स्वराज के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने सहर्ष फांसी की सजा स्वीकार की। महात्मा गांधी ने इस विषय पर हिन्द स्वराज नाम

विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध कहना तथ्यपरक और सिद्धान्तिक रूप से युद्ध था। इसके समर्थन में वीर सावरकर लिखते हैं कि जो सीता अपहरण को राम रावण युद्ध का कारण और कारत्स में गेंगे मौसं और सूरज के मौसं को 1857 के विद्रोह का कारण बताते हैं वह विमर्श और इतिहास लेखन में अंतर नहीं जानते हैं।

स्वधर्म और स्वराज के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने सहर्ष फांसी की सजा स्वीकार की। महात्मा गांधी ने इस विषय पर हिन्द स्वराज नाम

स्वधर्म और स्वराज के लिए भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने सहर्ष फांसी की सजा स्वीकार की। महात्मा गांधी ने इस विषय पर हिन्द स्वराज नाम

डिजिटल साक्षरता और नैतिक शून्यता

हमें एक ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है, जहाँ तकनीक का उपयोग तो हो, लेकिन गुरु की गरिमा और कक्षा का अनुशासन बना रहे



प्रोफेसर अशोक कुमार

किसी भी राष्ट्र की निर्यति उसकी कक्षाओं में लिखी जाती है। भारत, जिसने सदियों तक विश्व गुरु के रूप में अपनी पहचान बनाए रखी, आज एक अजीबोगरीब विरोधाभास के दौर से गुजर रहा है। एक तरफ हम विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का जयम मना रहे हैं, तो दूसरी तरफ हमारे राष्ट्रीय चरित्र और शैक्षिक मूल्यों में एक गहरी खाई नज़र आ रही है। यह विडंबना ही है कि जब हमारे पास संसाधन सीमित थे, तब शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान और चरित्र था, लेकिन आज जब संसाधन प्रचुर हैं, तो शिक्षा महज एक उपभोक्ता वस्तु बनकर रह गई है।

अभवाव क दौर और शिक्षा की गरिमा इतिहास गवाह है कि जब भारत आर्थिक रूप से संघर्ष कर रहा था, तब समाज में शिक्षा के प्रति एक पवित्र दृष्टिकोण था। उस समय मनोरंजन के साधन सीमित थे और रोजगार के

अवसर कठिन, इसलिए शिक्षा को ही जीवन के एकमात्र उद्धार के मार्ग के रूप में देखा जाता था। समाजता का भाव: उस दौर में अमीर और गरीब के बच्चे प्रायः एक ही टाट-पट्टी पर बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे। शिक्षा सामाजिक मान्यता का आधार थी। शिक्षक का स्थान: शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का नैतिक मार्गदर्शक था। उसका सम्मान उसकी संयति से नहीं, बल्कि उसकी विद्वता और चरित्र से तय होता था। आर्थिक संपन्नता और बदलता सामाजिक ढांचा आर्थिक उदारीकरण और तकनीक के विस्तार ने समाज के एक बड़े वर्ग के लिए बिना औपचारिक शिक्षा के आजोबिका के रस्ते खोल दिए हैं। आज ओला-उबर, ज़ोमेटो-रिक्शा, और हज़ारों शोरूमों में सेल्समैन या डिजिटली वॉय के रूप में रोजगार पाना आसान हो गया है। अल्पकालिक संतुष्टि बनाम दीर्घकालिक विकास: युवा वर्ग को लगता है कि यदि वे 10वीं-12वीं के बाद ही 15-20 हजार रुपये कमाने में सक्षम हैं, तो उच्च शिक्षा और चरित्र निर्माण की जटिल प्रक्रिया में समय क्यों गँवाया जाए? सोशल मीडिया का प्रभाव: फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसे मंचों ने सतही ज्ञान को बढ़ावा दिया है। लोग रील और पोस्ट को ही

अंतिम सत्य मानने लगे हैं, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच समाप्त हो रही है। शिक्षा का व्यावसायिकरण और दोहरी व्यवस्था आर्थिक संपन्नता ने शिक्षा को दो हिस्सों में बाँट दिया है: अमीर वर्ग: इनके लिए शिक्षा एक लक्जरी वस्तु है। ऊँची फीस देकर डिग्रियाँ तो खरीदी जा सकती हैं, लेकिन संस्कार, अनुशासन और वास्तविक ज्ञान का अभाव बना रहता है। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल नेटवर्किंग और स्टेट्स सिंबल रह गया है। गरीब वर्ग: सरकारी स्कूलों की बहाली और निजी संस्थानों की महंगी फीस के बीच गरीब बच्चा केवल कामचलाऊ साक्षरता तक सीमित रह गया है।

तकनीकी विकास और गुरु-शिष्य परंपरा का अंत ऑनलाइन शिक्षा और गूगल ने जानकारी को सुलभ तो बनाया, लेकिन ज्ञान और बोध को छीन लिया है। खोजली डिग्रियाँ: ऑनलाइन परीक्षा के देकर प्राप्त की गई डिग्रियाँ कागज के टुकड़े से अधिक कुछ नहीं हैं। इनमें वह तपस्या और अनुशासन गायब है जो एक गुरु के सानिध्य में प्राप्त होता था। शिक्षक की उपेक्षा: आज शिक्षक को एक सर्विस प्रोवाइडर मान लिया गया है। प्रो. अशोक कुमार के लेख के अनुसार, शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों, जनागणना और

कुनबी ब्यूटी में झोंककर सरकार ने उनकी गरिमा को डेटा एंट्री ऑपरिटर के स्तर पर ला दिया है। राष्ट्रीय चरित्र का संकट: एक कड़वी हकीकत जब शिक्षा का उद्देश्य केवल पेट भरना रह जाता है, तो राष्ट्रीय चरित्र का पतन निश्चित है। आज हम सड़कों पर धुकते, गंदगी फैलाते, ट्रैनों में धक्का-मुक्की करते और अनुशासनहीनता दिखाते समाज को देख रहे हैं। तुलनात्मक अध्ययन: चीन, जापान और जर्मनी जैसे देश इसलिए आगे नहीं हैं कि वे केवल अमीर हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि वहाँ अनुशासन और राष्ट्रीय गौरव उनकी शिक्षा का मूल आधार है। हमारे यहाँ व्यक्तिगत लाभ को राष्ट्रीय हित से ऊपर रखा जाने लग रहा है। समाधान का मार्ग: भविष्य की राह हम तकनीक और आर्थिक प्रगति के युग में पीछे नहीं लौट सकते, लेकिन व्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार अनिवार्य हैं: अनिवार्य और मूल्य-आधारित प्राथमिक शिक्षा: जिस तरह कई देशों में सैन्य सेवा अनिवार्य है, भारत में कम से कम 10वीं तक की शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य होनी चाहिए। इस शिक्षा का 50 प्रतिशत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, नैतिकता और नागरिक कर्तव्यों पर केंद्रित होना चाहिए। शिक्षक की प्रतिष्ठा की बहाली:

शिक्षक को पुनः समाज के शीर्ष पर स्थापित करना होगा। शिक्षकों को सरकारी आवास और बेहतर सुविधाएँ मिलनी चाहिए ताकि वे आर्थिक चिंताओं से मुक्त होकर शिक्षण कर सकें। हर जिले की प्रशासनिक बैठकों में वरिष्ठ शिक्षकों की भागीदारी अनिवार्य हो। उनके सुझावों को केवल सुना न जाए, बल्कि उन्हें कानूनी मान्यता दी जाए। राजनीति का शिक्षाकरण: शिक्षा को चुनावी एजेंडे में अंतिम स्थान से हटाकर प्रथम स्थान पर लाना होगा। जब तक जनता अच्छे स्कूल और पुस्तकालय के नाम पर वोट नहीं देगी, तब तक राजनेता इसमें निवेश नहीं करेंगे। निष्कर्ष-आर्थिक संपन्नता यदि संस्कारों और चरित्र के साथ न आए, तो वह समाज को विनाश की ओर ले जाती है। हमें एक ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जहाँ तकनीक का उपयोग तो हो, लेकिन गुरु की गरिमा और कक्षा का अनुशासन बना रहे। यदि हम आज अपने राष्ट्रीय चरित्र के खोखलेपन को भरने के लिए ठोस कदम नहीं उठाते, तो भविष्य की पीढ़ियाँ केवल साक्षर होंगी, शिक्षित नहीं। राष्ट्र की वास्तविक मजबूती उसकी जड़ों में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के आचरण और नैतिकता में निहित है। -प्रोफेसर अशोक कुमार, पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय

पीएम श्री स्कूलों में पदस्थापन प्रक्रिया को लेकर शिक्षकों में असंतोष

'शिक्षक संघ रेसटा की मांग है कि निष्पक्ष चयन के लिए विभागीय लिखित परीक्षा जरूरी है, केवल साक्षात्कार से पारदर्शिता सुनिश्चित नहीं हो सकती'

श्रीगंगानगर, (निसं)। राज्य के सरकारी शिक्षा तंत्र में गुणवत्ता सुधार की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने पीएम श्री स्कूलों में पदस्थापन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। राज्यभर के 402 पीएम श्री विद्यालयों में 14 संवर्गों के 4 हजार 332 से अधिक संभावित रिक्त पदों को भरने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। यह पदस्थापन तीन वर्ष की अवधि के लिए होगा। इसे प्रदर्शन के आधार पर दो वर्ष तक बढ़ाया भी जा सकेगा। इस निर्णय को शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के लिए अहम माना जा रहा है।

चयन प्रक्रिया को लेकर शिक्षकों के बीच असंतोष भी उभरने लगा है। शिक्षक संगठनों ने साक्षात्कार आधारित चयन पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने लिखित परीक्षा के जरिए पारदर्शी भर्ती की मांग की है। इसलिए अहम है पीएम श्री विद्यालयों में यह भर्ती: पीएम श्री स्कूलों को केंद्र व राज्य सरकार की प्रवेशिषिषि योजना के तहत आधुनिक संसाधनों और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मांडल के रूप में विकसित किया जा रहा है। ऐसे में योग्य और अनुभवी शिक्षकों की तैयारी से इन स्कूलों की गुणवत्ता व परिणामों में बड़ा सुधार आने की उम्मीद है। विभाग ने

मध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने पीएम श्री स्कूलों में पदस्थापन की प्रक्रिया शुरू की है। इस बार पात्रता के लिए सख्त मापदंड तय किए हैं। अभ्यर्थियों के लिए 10वीं से लेकर स्नातकोत्तर व व्यावसायिक योग्यता (बीएड/बीएएसटी) तक हर स्तर पर न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक अनिवार्य किए गए हैं। प्राचाय पद के लिए 5 वर्ष का अनुभव जरूरी होगा।

पिछले 5 वर्षों में 100 प्रतिशत बोर्ड परीक्षा परिणाम की शर्त भी रखी गई है। इसके अलावा अन्य पदों पर भी संबंधित विषय में अनुभव जरूरी होगा। लगातार बेहतर परिणाम देना भी जरूरी होगा। शिक्षक संघ रेसटा के प्रदेशाध्यक्ष मोहर सिंह सलवाद का कहना है कि विभाग ने स्पष्ट किया है कि वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम, महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी या बालिका सैनिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षक इस प्रक्रिया में भाग नहीं ले सकेंगे। इसके अलावा जिन कार्मिकों के खिलाफ विभागीय जांच चलिचत है,

उनके आवेदन निरस्त कर दिए जाएंगे। जो दंडित हो चुके हैं, उनके आवेदन भी निरस्त कर दिए जाएंगे। जबकि होना यह चाहिए कि शिक्षा विभाग को राज्य के पीएम श्री विद्यालयों की चयन प्रक्रिया में कार्यरत सभी कार्मिकों को शामिल करना चाहिए। पुरानी डिग्रियों के अंकों से किसी शिक्षक को वर्तमान क्षमता का सही आकलन नहीं हो सकता। शिक्षक संघ रेसटा की मांग है कि निष्पक्ष चयन के लिए विभागीय लिखित परीक्षा जरूरी है। केवल साक्षात्कार से पारदर्शिता सुनिश्चित नहीं हो सकती।



पंडित अनिल शर्मा

राशिफल

सोमवार 4 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2083, अनुराधा नक्षत्र प्रातः 9:58 तक, परिध शुक रावि 11:20 तक, वजिच करण सायं 4:13 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मौन, बुध-मेघ, गुरु-मिथुन, शुक्र-मेघ, शनि-मौन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह। आज सर्वोर्ष सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:58 तक ही। भद्रा सायं 4:13 से मंगलावार प्रातः 5:25 तक रहेगी। आज मां आनन्दमयी जयन्ती है। श्रेष्ठ चौविद्युया: अमृत सूर्योदय से 7:29 तक, शुभ 9:07 से 10:45 तक, चर 2:02 से 3:40 तक, लाभ-अमृत 3:40 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:50, सूर्यास्त 6:57।

मेघ चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आज समय अंगराल कार्यों में खराब हो सकता है।

वृष परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मार्गलिक कार्य समन्वय हो सकते हैं। आज व्यावसायिक आर्थिक मामलों सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक व्यावसायिक अडूचनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागीदौड़ से राहत मिलेगी। मानसिक तनाव दूर होगा।

मिथुन विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटकें दूर कार्य बनें लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अंगराल कार्यों में खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं।

कर्क परिजन के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आपसी ईर्ष्या-वैममन्यता के कारण परेशानी हो सकती है। आज महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मकर आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

सिंह घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कुंभ व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। अटकें दूर कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनें लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संबंध बनेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मौन व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों सुगमता से बनें लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आज अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।